डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 05.09.2020

व्याख्यान संख्या-52 (कुल सं. 88)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

पावक-झर तें मेह-झर दाहक दुसह विशेष।

दहै देह वाके परस याहि दृगन ही देख।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग प्रोषितपतिका नायिका द्वारा वर्षा की झड़ी को आग की लपट से भी अधिक दुखदाई बताने का है। 'प्रोषितपतिका' अवस्थानुसार नायिका का एक भेद है। जिसका पति या प्रिय परदेश चला गया हो उसे प्रोषितपतिका कहते हैं। इसी के अन्य नाम है 'प्रोषितप्रेयसी', 'प्रोषितप्रिया' एवं 'प्रोषितभर्तृका'। 'प्रोषित' का अर्थ है परदेश या विदेश में रहने वाला। पति के दूर देश जाने के कारण प्रोषितपतिका मिलन के अभाव में विरह-दुःख से कातर या विकल रहा करती है। ऐसी ही एक नायिका लगातार होती वर्षा से पति या प्रिय की याद और अधिक बढ़ जाने के कारण अपनी सखी से ये बातें कह रही है।

सखी के प्रति नायिका के शब्दों में कवि का कहना है कि मेघ की झड़ी अर्थात् लगातार होती बरसात आग की लपट से भी अधिक दाहक और दुस्सह है क्योंकि उसके (अर्थात् आग के) तो स्पर्श होने पर देह जलती है, परंतु इसे (अर्थात् वर्षा की झड़ी को) तो आँखों से देखकर ही शरीर जलने लगता है।

प्रस्तुत दोहे के परिशीलन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इसमें कवि का उद्देश्य वर्षा ऋतु में वियोग शृंगार की अधिकता दिखलाने का है। लगातार वर्षा होती रहने पर सामान्यतया कोई स्त्री अपने पति के पास ही रहना चाहती है,

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

परंतु जिसका पति या प्रिय परदेश चला गया है उसके लिए यह संभव नहीं है; और जिस युग का यह वर्णन है उसमें किसी अन्य साधन से भी उनसे किसी प्रकार का संपर्क संभव नहीं था। अतः वर्षा को देखकर उनकी अत्यधिक याद आने से विरह और अधिक तेज हो जाता था, जिसको सह पाना कठिन होता था। इसलिए कवि ने उसे आग की लपट से भी अधिक दाहक और कठिनाई से सहा जा सकने योग्य बताया है; क्योंकि आग की लपट का जब तक शरीर से स्पर्श नहीं होगा तब तक उससे जलने का कोई भय नहीं, परंतु लगातार होती वर्षा को तो जितना आँखों से निहारा जाता है उतना ही अपने प्रिय की याद बढ़ती जाती है और उसी तरह विरह की ज्वाला भी अधिकाधिक जलाने लगती है।

प्रस्तुत दोहे में 'झर' शब्द के दो अर्थ हैं-- पहले तो उसका अर्थ है लपट, ज्वाला अथवा दाह और दूसरी जगह उसका अर्थ है 'झड़ी' अर्थात लगातार पानी बरसना।

प्रस्तुत दोहे में व्यतिरेक अलंकार है। व्यतिरेक एक सादृश्य मूलक अलंकार है। उपमान की अपेक्षा उपमेय के गुणोत्कर्ष वर्णन को व्यतिरेक अलंकार कहते हैं। व्यतिरेक का अर्थ है विशेष प्रकार का अतिरेक या आधिक्य। इसमें गुणविशेष के कारण उपमेय के उत्कर्ष या आधिक्य का

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्णन किया जाता है अर्थात् कवि उपमान की अपेक्षा उपमेय को अधिक सबल और प्रौढ़ सिद्ध करता है। प्रस्तुत दोहे में पावक-झर अर्थात् आग की लपट उपमान है और मेह-झर अर्थात् वर्षा की झड़ी उपमेय है, क्योंकि इसकी उपमा आग की लपट से दी गयी है; परंतु इसे आग की लपट से भी अधिक सबल सिद्ध किया गया है, इसलिए यहाँ व्यतिरेक अलंकार है।